नई शिक्षा नीति और भाषाई समावेशन.docx

Document Details

Submission ID

trn:oid:::29034:140787195

Submission Date

May 28, 2026, 4:20 PM GMT+5:30

Download Date

May 28, 2026, 4:36 PM GMT+5:30

File Name

नई शिक्षा नीति और भाषाई समावेशन.docx

File Size

23.1 KB

6 Pages

2,228 Words

10,593 Characters

11% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography

Top Sources

0%	Internet sources
0%	Publications
11%	Submitted works (Student Papers)

Integrity Flags

0 Integrity Flags for Review

No suspicious text manipulations found.

Our system's algorithms look deeply at a document for any inconsistencies that would set it apart from a normal submission. If we notice something strange, we flag it for you to review.

A Flag is not necessarily an indicator of a problem. However, we'd recommend you focus your attention there for further review.

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
11% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

#	Type	Source	Match
1	Submitted works	College Faculty Members on 2026-05-06	2%
2	Submitted works	College Faculty Members on 2026-05-09	1%
3	Submitted works	College Users IQAC, Library, Others on 2026-05-15	1%
4	Submitted works	College Faculty Members on 2026-04-30	<1%
5	Submitted works	IMS Unison University on 2026-04-10	<1%
6	Submitted works	College Faculty Members on 2026-05-04	<1%
7	Submitted works	College Faculty Members on 2026-05-09	<1%
8	Submitted works	University of Delhi on 2026-05-13	<1%
9	Submitted works	University of Delhi on 2026-04-26	<1%
10	Submitted works	University of Delhi on 2026-05-03	<1%
11	Submitted works	University of Delhi on 2026-05-10	<1%

12 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-12 <1%

13 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-12 <1%

14 Submitted works

Fiji National University on 2026-05-22 <1%

15 Submitted works

Ambedkar University Delhi on 2026-03-25 <1%

16 Submitted works

College Users IQAC, Library, Others on 2026-05-13 <1%

17 Submitted works

The Northcap University on 2026-05-20 <1%

18 Submitted works

University of Delhi on 2026-05-11 <1%

19 Internet

www.slideshare.net <1%

20 Submitted works

College Faculty Members on 2026-05-05 <1%

21 Submitted works

The Bhopal School of Social Sciences on 2026-04-25 <1%

22 Submitted works

The Bhopal School of Social Sciences on 2026-04-25 <1%

23 Submitted works

The University of the South Pacific on 2026-04-30 <1%

24 Submitted works

College Faculty Members on 2026-05-07 <1%

25 Submitted works

College Faculty Members on 2026-05-10 <1%

नई शिक्षा नीति और भाषाई समावेशन: हिंदी माध्यम शिक्षा में एआई की उपयोगिता

सारांश

भारत की शिक्षा व्यवस्था बहुभाषिकता, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक असमानताओं के जटिल संदर्भों में विकसित हुई है। लंबे समय तक अंग्रेज़ी-केंद्रित शिक्षा प्रणाली ने हिंदी माध्यम तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विद्यार्थियों को ज्ञान, तकनीकी संसाधनों और रोजगार के अवसरों से आंशिक रूप से वंचित रखा। नई शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा-आधारित शिक्षा, बहुभाषिकता और डिजिटल शिक्षा पर बल देकर इस असंतुलन को दूर करने का प्रयास किया है। दूसरी ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत अधिगम, भाषा अनुवाद, स्मार्ट कंटेंट, वॉयस असिस्टेंस तथा डिजिटल शिक्षण के नए आयाम विकसित किए हैं। यह शोधपत्र नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में हिंदी माध्यम शिक्षा में एआई की उपयोगिता का विश्लेषण करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि एआई आधारित तकनीकें भाषाई समावेशन को सुदृढ़ कर सकती हैं तथा हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को अधिक सुलभ बना सकती हैं। साथ ही डिजिटल विभाजन, तकनीकी असमानता, हिंदी डेटा की कमी तथा शिक्षक प्रशिक्षण जैसी चुनौतियों का भी विवेचन किया गया है।

मुख्य शब्द: नई शिक्षा नीति 2020, भाषाई समावेशन, हिंदी माध्यम शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), डिजिटल शिक्षा।

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भाषा का प्रश्न सदैव सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विमर्श का केंद्र रहा है। औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ी शिक्षा को प्रशासन और आधुनिक ज्ञान का माध्यम बनाया गया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय भाषाएँ धीरे-धीरे ज्ञान-व्यवस्था के केंद्र से दूर होती चली गईं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनेक शिक्षा आयोगों और समितियों ने मातृभाषा आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया, किंतु व्यवहारिक स्तर पर अंग्रेज़ी का प्रभुत्व बना रहा। भारतीय समाज में अंग्रेज़ी को आधुनिकता, प्रतिष्ठा और आर्थिक प्रगति से जोड़कर देखा जाने लगा, जबकि हिंदी माध्यम शिक्षा को अपेक्षाकृत कम महत्व प्राप्त हुआ। कृष्ण कुमार के अनुसार भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक वर्ग विभाजन का उपकरण भी बन चुकी है (कुमार, 2005, पृ. 118)।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन का दस्तावेज़ है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रारंभिक स्तर तक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में प्रदान की जानी चाहिए क्योंकि बच्चे अपनी भाषा में अधिक सहजता और प्रभावशीलता के साथ सीखते हैं (भारत सरकार, 2020, पृ. 12)। “नई शिक्षा, नया भारत” पुस्तक में प्रकाशित *“राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भूमिका, उद्देश्य और वैचारिक आधार”* शीर्षक शोधपत्र

3 3 में यह उल्लेख किया गया है कि नई शिक्षा नीति केवल पाठ्यक्रम परिवर्तन का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि भारतीय
10 ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक मूल्यों और आधुनिक तकनीकी शिक्षा के समन्वय का प्रयास है (सोनिया रानी एवं प्रो.
10 नंद किशोर, 2026, पृ. 3)। इस नीति का उद्देश्य शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित न रखकर विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक और रचनात्मक विकास से जोड़ना है।

इक्कीसवीं सदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा की प्रकृति को गहराई से प्रभावित किया है। एआई आधारित तकनीकें भाषा अनुवाद, व्यक्तिगत अधिगम, वर्चुअल शिक्षण और स्मार्ट मूल्यांकन जैसी सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। Brown आदि के अनुसार बड़े भाषा मॉडल संदर्भ के अनुसार भाषा को समझने और उत्पन्न करने में
15 अत्यधिक सक्षम हो चुके हैं (Brown et al., 2020, p. 7)। हिंदी माध्यम शिक्षा के संदर्भ में एआई विशेष महत्व रखती है क्योंकि यह भाषाई बाधाओं को कम करने, डिजिटल संसाधनों को हिंदी में उपलब्ध कराने तथा ग्रामीण और वंचित वर्गों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने में सहायक हो सकती है। तथापि यह भी सत्य है कि तकनीक सामाजिक संरचनाओं से पृथक नहीं होती। यदि एआई का विकास केवल अंग्रेज़ी-केंद्रित डेटा और शहरी आवश्यकताओं के आधार पर होगा, तो यह असमानताओं को कम करने के बजाय और अधिक गहरा भी कर सकती है।

नई शिक्षा नीति 2020 और भाषाई समावेशन

2 3 नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समावेशी, बहुभाषिक और कौशल-आधारित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कम-से-कम कक्षा पाँच तक तथा जहाँ संभव हो वहाँ कक्षा आठ तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा होना चाहिए (भारत सरकार, 2020, पृ. 14)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 में भी यह स्वीकार किया गया था कि बच्चे अपनी मातृभाषा में अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं तथा भाषा अधिगम और संज्ञानात्मक विकास के बीच गहरा संबंध होता है (एनसीईआरटी,
25 2005, पृ. 37)। नई शिक्षा नीति ने इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए भारतीय भाषाओं को शिक्षा के केंद्र में स्थापित करने का प्रयास किया है।

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भूमिका, उद्देश्य और वैचारिक आधार" शीर्षक शोधपत्र में यह कहा गया है कि
21 नई शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन
12 स्थापित करने का प्रयास करती है (सोनिया रानी एवं प्रो. नंद किशोर, 2026, पृ. 10)। नीति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा-उन्मुख ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और नैतिकता से युक्त नागरिक बनाना है। इसी संदर्भ में त्रिभाषा सूत्र को पुनर्गठित करते हुए
9 भारतीय भाषाओं के संरक्षण और विकास पर विशेष बल दिया गया है।

4 भाषाई समावेशन का अर्थ केवल भाषाओं को पाठ्यक्रम में स्थान देना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि
16 प्रत्येक विद्यार्थी अपनी भाषाई पृष्ठभूमि के बावजूद गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सके। हिंदी माध्यम विद्यार्थियों

के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि लंबे समय तक अंग्रेज़ी माध्यम को श्रेष्ठता का प्रतीक माना गया। “भारतीय ज्ञान परंपरा और नई शिक्षा नीति 2020” शीर्षक शोधपत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि भाषा का संबंध केवल संप्रेषण से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक चेतना से भी होता है (डॉ. प्रवेश कुमार चौधरी, 2026, पृ. 44)। नई शिक्षा नीति भारतीय भाषाओं को ज्ञान-निर्माण और बौद्धिक विकास का आधार मानती है। यह दृष्टिकोण भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भाषाई लोकतंत्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

हिंदी माध्यम शिक्षा की वर्तमान स्थिति

भारत में बड़ी संख्या में विद्यार्थी हिंदी माध्यम विद्यालयों में अध्ययन करते हैं, विशेषकर ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में। इसके बावजूद उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में अंग्रेज़ी भाषा का प्रभुत्व बना हुआ है। परिणामस्वरूप हिंदी माध्यम विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं, तकनीकी शिक्षा और डिजिटल संसाधनों तक पहुँच में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की अधिकांश सामग्री अंग्रेज़ी में उपलब्ध है। हिंदी अनुवाद अक्सर देर से उपलब्ध होते हैं अथवा अत्यधिक जटिल भाषा में लिखे जाते हैं, जिससे विद्यार्थियों की समझ और आत्मविश्वास दोनों प्रभावित होते हैं।

डिजिटल शिक्षा के विस्तार के बावजूद हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री सीमित मात्रा में उपलब्ध है। अधिकांश ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म और शोध सामग्री अंग्रेज़ी में होने के कारण हिंदी माध्यम के विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा से पूर्ण रूप से लाभान्वित नहीं हो पाते। “शिक्षा, संस्कृति और समाज का भविष्य” शीर्षक शोधपत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि अंग्रेज़ी-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक दूरी को बढ़ाती है (डॉ. समीना कुरैशी, 2026, पृ. 22)। भारतीय समाज में अंग्रेज़ी दक्षता को सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक सफलता का प्रतीक माना जाता है, जिसके कारण हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में हीनभावना उत्पन्न होती है। यह स्थिति केवल भाषाई समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक असमानता का भी संकेत है।

रोजगार के क्षेत्र में भी हिंदी माध्यम विद्यार्थियों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों तथा तकनीकी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी दक्षता को प्राथमिकता दी जाती है। परिणामस्वरूप हिंदी माध्यम विद्यार्थी अपनी बौद्धिक क्षमता के बावजूद अवसरों से वंचित रह जाते हैं। नई शिक्षा नीति इन समस्याओं को दूर करने का प्रयास करती है, किंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए तकनीकी सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता : अवधारणा और शिक्षा में उपयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसी तकनीक है जिसके माध्यम से मशीनें मानव बुद्धि की भाँति कार्य करने में सक्षम होती हैं। इसमें मशीन लर्निंग, प्राकृतिक भाषा संसाधन, भाषण पहचान तथा डेटा विश्लेषण जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में एआई का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। एआई आधारित शिक्षण प्रणाली

विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और अधिगम क्षमता के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराती है। Brown आदि के अनुसार बड़े भाषा मॉडल मानव भाषा को संदर्भ के अनुसार समझने और उत्पन्न करने में सक्षम हैं (Brown et al., 2020, p. 9)।

नई शिक्षा नीति 2020 में राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (NETF) की स्थापना का प्रस्ताव इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है (भारत सरकार, 2020, पृ. 60)। "डिजिटल युग में शिक्षा का रूपांतरण : अवसर, जोखिम और सामाजिक प्रभाव" शीर्षक शोधपत्र में यह उल्लेख किया गया है कि तकनीकी नवाचार शिक्षा को अधिक लोकतांत्रिक और सुलभ बना सकते हैं, बशर्ते डिजिटल संसाधनों की समान पहुँच सुनिश्चित की जाए (साहिल एवं दीपक कुमार, 2026, पृ. 181)।

एआई का उपयोग व्यक्तिगत अधिगम, स्वचालित मूल्यांकन, भाषा अनुवाद, वर्चुअल ट्यूटर, टेक्स्ट-टू-स्पीच तथा स्पीच-टू-टेक्स्ट तकनीकों में किया जा रहा है। यह तकनीक विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है जो भाषाई या भौगोलिक कारणों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

हिंदी माध्यम शिक्षा में एआई की उपयोगिता

हिंदी माध्यम शिक्षा के संदर्भ में एआई की उपयोगिता अत्यंत व्यापक है। एआई आधारित अनुवाद प्रणाली अंग्रेज़ी सामग्री को हिंदी में परिवर्तित कर सकती है, जिससे वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की सामग्री हिंदी माध्यम विद्यार्थियों तक पहुँच सकती है। Kumar, Jha एवं Sahula के अनुसार कम संसाधन वाली भाषाओं के लिए मशीन अनुवाद तकनीकें शिक्षा के लोकतंत्रीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं (Kumar, Jha & Sahula, 2020, p. 3)। आज अनेक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म स्वचालित अनुवाद सुविधा प्रदान कर रहे हैं, जिसके माध्यम से विद्यार्थी वैश्विक ज्ञान संसाधनों तक अपनी भाषा में पहुँच बना सकते हैं।

एआई आधारित व्यक्तिगत अधिगम प्रणाली विद्यार्थियों की सीखने की गति और क्षमता के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराती है। इससे कमजोर विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता प्राप्त होती है। "NEP 2020 में सुझाए गए कौशल-आधारित शिक्षण ढाँचे में संवेगात्मक बुद्धि और उपलब्धि प्रेरणा की भूमिका" शीर्षक शोधपत्र में यह उल्लेख किया गया है कि व्यक्तिगत अधिगम विद्यार्थियों की रचनात्मकता, आत्मविश्वास और समस्या-समाधान क्षमता को बढ़ाता है (कुसुम मीणा, 2026, पृ. 53)। हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि वे भाषाई बाधाओं के कारण अक्सर पीछे रह जाते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक विद्यार्थी अंग्रेज़ी इंटरफेस के कारण डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते। एआई आधारित वॉयस असिस्टेंट हिंदी में संवाद स्थापित कर सकते हैं, जिससे डिजिटल शिक्षा अधिक सुलभ बन सकती है। स्मार्ट कंटेंट, चित्र, वीडियो और इंटरैक्टिव गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण को रोचक और प्रभावी बनाया जा सकता है। "सिनेमा के माध्यम से शिक्षा : समाज और संस्कृति पर प्रभाव" शीर्षक शोधपत्र में

दृश्य-श्रव्य माध्यमों की शैक्षिक उपयोगिता पर बल दिया गया है तथा यह बताया गया है कि डिजिटल माध्यम जटिल विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं (डॉ. मनीष दत्तात्रेय पांडेय, 2026, पृ. 31)।

1 2 एआई शिक्षकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। यह पाठ योजना निर्माण, मूल्यांकन तथा विद्यार्थियों
की प्रगति के विश्लेषण में सहायता प्रदान कर सकती है। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी और व्यवस्थित
बन सकती है।

एआई और भाषाई लोकतंत्रीकरण

5 भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सत्ता और ज्ञान की संरचना का हिस्सा भी होती है। लंबे समय तक
7 ज्ञान का केंद्रीकरण अंग्रेज़ी भाषा में रहा है। एआई इस केंद्रीकरण को चुनौती देने की क्षमता रखती है क्योंकि
यह बहुभाषिक सामग्री को बड़े स्तर पर विकसित कर सकती है। “शिक्षा, संस्कृति और समाज का भविष्य”
शोधपत्र में यह कहा गया है कि शिक्षा और तकनीक का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि सांस्कृतिक
संरक्षण और सामाजिक समानता भी होना चाहिए (डॉ. समीना कुरैशी, 2026, पृ. 24)।

प्राकृतिक भाषा संसाधन तकनीकें हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल सामग्री निर्माण में सहायक हैं।
यदि एआई का उपयोग समावेशी दृष्टिकोण से किया जाए, तो यह शिक्षा में भाषाई लोकतंत्रीकरण का प्रभावी
माध्यम बन सकती है। तथापि अधिकांश एआई मॉडल अंग्रेज़ी डेटा पर आधारित हैं। परिणामस्वरूप भारतीय
7 भाषाओं के संदर्भ में उनकी सटीकता सीमित हो सकती है। Explainable AI की अवधारणा इसी संदर्भ में
महत्वपूर्ण है (Arrieta et al., 2020, p. 84)।

तकनीक स्वयं निष्पक्ष नहीं होती। वह उसी समाज की मानसिकता और असमानताओं को आगे बढ़ाती है जिसने
उसे निर्मित किया है। यदि एआई का विकास केवल अंग्रेज़ी-केंद्रित पूँजीवादी ढाँचे में होगा, तो भाषाई समावेशन
1 का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। मानव सभ्यता ने सदियों तक ज्ञान को कुछ भाषाओं की निजी संपत्ति बनाए
रखा। अब वही संघर्ष डिजिटल संसार में भी दिखाई देता है।

निष्कर्ष

8 नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, बहुभाषिक और तकनीक-सम्मत बनाने की
दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। हिंदी माध्यम शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए केवल नीतिगत घोषणाएँ पर्याप्त
नहीं हैं; इसके लिए गुणवत्तापूर्ण संसाधनों, तकनीकी सहयोग और सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता
है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस दिशा में एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकती है। एआई आधारित अनुवाद, व्यक्तिगत
9 अधिगम, स्मार्ट कंटेंट और वॉयस तकनीकें हिंदी माध्यम विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ और
प्रभावी बना सकती हैं। इससे भाषाई बाधाएँ कम होंगी तथा ग्रामीण और वंचित वर्गों को शिक्षा के समान अवसर
प्राप्त हो सकेंगे।

फिर भी तकनीक स्वयं समाधान नहीं है। यदि सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ बनी रहती हैं, तो एआई भी उन्हीं असमानताओं को पुनः उत्पन्न करेगी। इसलिए आवश्यक है कि तकनीक का विकास मानव-केंद्रित और भाषाई न्याय पर आधारित दृष्टिकोण के साथ किया जाए। नई शिक्षा नीति और एआई का समन्वय भारत को ऐसी शिक्षा व्यवस्था की ओर ले जा सकता है जहाँ भाषा किसी विद्यार्थी की सीमा न होकर उसकी शक्ति बने। ज्ञान तभी लोकतांत्रिक होगा जब वह केवल कुछ भाषाओं तक सीमित न रहकर समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचे। अकादमिक जगत को यह बात समझने में बहुत समय लगा। मनुष्य पहले दीवारें बनाता है, फिर सम्मेलनों में बैठकर “समावेशन” पर शोधपत्र पढ़ता है।